# चारण

चारण राजपूत हैं। ये वीर राजाओं की शूरवीरता व विजय गाथाओं को घुमते फिरते लोगों में राजाओं के दरवारों में और लड़ाई के मैदानों में कविता के रूप में निर्भिकता से सुनाते हैं जिससे जनसाधारण में देश प्रेम बना रहे व इतिहास भी ज्ञात रहे। इन की रचनाओं की शैली व उच्चारण इतनी प्रभावशाली होती है कि सुनते ही जोश व हिम्मत का नया संचार होने लगता है। इन से झूठीं बढ़ाई नहीं होती और न ही चापलूस्मी।ये केवल आदर सम्मान से संतुष्ट हो जाते हैं। इनका रहन सहन सादा होता है। केवल पुरूष ही काव्य सुनाते दिखाई देते हैं। स्त्रीयॉ नहीं।इनका काव्य जव ही मुखरित होता है जव इनके पात्र या तो शूरवीर हो या महान दानी।इन की सलाह महिलाओं को नई दिशा देती है और उनकी मानसिकता को उच्चतम धरातल पर ले जाती है वे कहते हैं

'जननी जणे तो ऐसा जण क दाता क सूर

नी तो रीजैं वॉझड़ी मत गवॉई जैं नूर'

इसवी सवत **1911** में वरतानिया सरकार ने भारत की राजधानी कलकत्ता से बदल कर दिल्ली कर दी और इसका उदघाटन करने माहरानी विक्टोरिया लंदन से भारत आई।नई दिल्ली में जहॉ अभी राष्ट्रपति भवन है वह रायला हिल्स कहलाती थी वहॉ वड़ी दूर तक फैले टेंट लगे। अंदर भी शाही शान शौकत की विछायत की गई। भारत के सभी राजाओं नवावों को आमंत्रित किया गया व उन सव के सिंहासन लगे और उनको 'स्टार आफ इन्ड़िया' की पदवी से सम्मान्ति करने का आयोजन था। उदयपुर नरेश राणा फतेहसिंह जी को भी निमंत्रण भिजवाया गया था। इनको दिल्ली रेल से जाना था तो एक विशेष रेल का डिव्वा या सैलून वनवाया गया जिसमें राजमहल के कमरे की सब सुविधाऐं थी व उसका विशेष इंजिन बना जिस में कोयले की जगह चंदन की लकड़ी जलाई जाती थी व तेल की जगह चमेली का तेल वापरा जाता था जिस से राणा जी को कोयले के जलने का धुँआ व वदवू न आये। यह समाचार उदयपुर में वच्चें वच्चें तक फैल गया।

एक वृद्ध चारण तक यह समाचार पहुँचा तो उनको वरदास्त नहीं हुआ क्योंकि वहॉ प्रमुख राजाओं को माहरानी के पिछें लटती लम्वी झूल को उठाये उठाये पीछें पीछें चलना भी था।चारण ने राणा को रोकने की कविता वनाई और महल की ड़यौढ़ी तक गये। लेकिन राणा जी की रेल गाड़ी उदयपुर रेलवे स्टेशन छोड़ चुकी थी।

चारण अपना घोड़ा ले कर रेल के पिछें दौड़ते हैं।रात भर रेल आगे आगे और चारण का घोड़ा नदी नाले पार करता पीछें पीछें दौड़ता रहा। सुवह हो रही थी गाडी फुलेरा स्टेशन पर इंजिन में पानी भराने के लिये रूकी। लेकिन अंग्रेजों का पहरा था। रेल के डिव्वे के पास चिड़िया भी पर नहीं मार सकती थी।चारण स्तिथी समझ गये थे।अगर उनका संदेश यहॉ न पहुँचा तो दिल्ली तक रेल गाडी तक दौड़ना मुश्किल है और वहॉ का पहरा और भी सख्त मिलेगा।

उन्होनें तुरंत योजना वनाई पास में मैथर की टपरी थी उस में घुसे अंगुली से सोने की अंगूठी उतारी और उसे दी। झटपट उसकी रेलवे की वर्दी पहन कर हाथ में झाडू लेकर सफाई वाला वन कर सैलून के पास गये और लिखी कविता जोर जोर से पढ़ सुनाई जिसका साराशं था कि सूर्य तारा वनने दिल्ली जा रहा है और नौकरों की तरह एक औरत के पिछें उसके पल्ले उठायेगा।

कविता सुनते ही राणा में सोया सिंह जाग गया।फौरन हुक्म दिया इंजिन को काट कर सैलून के आगे नहीं पीछें लगाया जाये।

दिल्ली दरवार में उदयपुर का सिंहासन खाली देख कर माहरानी की भौंयें चढ़ गई।